[काव्य सौन्दर्य के तत्व]

रस, छन्द, अलंकार

↓

(क) रस

"विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्ति: "

-भरतमुनि

"विभाव अनुभाव एवं व्यभिचारी (संचारी) भाव आदि के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।"

- **स्थायी भाव :-**सहृदय (पाठका दर्शक) के हृदय में जो भाव स्थायी रूप से विद्यमान रहे।

विभाव:- जिसके कारण रस प्राप्त होता है।

प्रकार-2

- **आलम्बन विभाव**
  - **(आलम्बन)**
    - **जिसके कारण**
  - **(आश्रय)**
    - **जिसके हृदय में**
- **उद्दीपन विभाव**
  - **स्थाई भावों को उद्दीप्त करें।**

- **अनुभाव**→ आश्रय की बाह्य चेष्टाएँ ।

  जैसे- रोमांच, कम्पन, स्वेद। ,

- **संचारी भाव**→क्षण भर के लिए उठने वाले भाव।

  33↓

  (पानी के बुलबुलों के समान)

⭐ श्रृंगार रस ⭐

परिभाषा :- जब 'रति' नामक स्थायी भाव विभाव अनुभाव, व्यभिचारी भावों द्वारा पुष्ट होता है तब श्रृंगार रस की निष्पत्ति होती है. -

दो भेद माने गये हैं.

(1) संयोग श्रृंगार

(2) विप्रलम्भ (वियोग श्रृंगार)

संयोग श्रृंगार-

जहाँ पर नायक नायिका का मिलन होता है। वहाँ संयोग श्रृंगार होता है।

जैसे→'बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय ।
सौंह करें भौहनि हंसै, देन कहै नहि जाय ॥"

स्थायी भाव→ रति

आश्रय→ नायक

आलम्बन→ नायिका

उद्दीपन→नायिका की चेष्टाएँ - मुस्कान, हाव भाव, बंकिम दृष्टि।

अनुभाव→कटाक्ष, आलिंगन, चुम्बन

संचारी भाव→ लज्जा, हर्ष, चपलता

विप्रलम्भ/वियोग श्रृंगार→

जहाँ पर नायक-नायिका के वियोग का वर्णन हो, वहाँ वियोग श्रृंगार रस होता है।

जैसे→हे! खग, मृग! हे! मधुकर श्रेनी।
तुम देखी सीता मृगनैनी ॥

स्थायी भाव → रति

आश्रय→सीता

आलम्बन→ सीता

उद्दीपन → नायक राम की चेष्टाएँ - विलाप, रुदन।

अनुभाव → स्तंभ, स्वेद, स्वरभंग

संचारी भाव→ निषाद, मोह, दीनता।

उदाहरण→

- "दूलह श्रीरघुनाथ बने दुलही सिय सुन्दरी मन्दिर माहीं ।
  गावति गीत सबै मिलि सुन्दरि बेद जुवा जुरि बिप्र पढ़ाहीं||
  राम को रूप निहारति जानकि कंकन के नग की परछाहीं।
  यातें सबै सुधि भूल गई कर टेकि रही, पल टारत नाहीं ।।"

- कौन हो तुम विरस वसंत के दूत
  विरस पतझड़ में अति सुकुमार;
  घन तिमिर में चपला की रेख
  तपन में शीतल मंद बयार!

- मेरे प्यारे नव जलद से कंज से नेत्रवाले।
  जाके आये न मधुबन से औ न भेजा संदेशा।
  मैं रो रो के प्रिय - विरह से बावली हो रही हूँ।
  जा के मेरी सब दुख-कथा श्याम को तू सुना दे॥

हास्य रस

परिभाषा→

किसी की विकृत वेशभूषा, चेष्टा आदि को देखकर जब 'हास' 'नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव एवं व्यभिचारी भाव आदि द्वारा पुष्ट होता है, तब हास्य रस की निष्पत्ति होती है।

जैसे→"जेहि दिसि बैठे नारद फूली। सो दिसि तेहि न विलोकी भूली ॥
पुनि-पुनि मुनि उमगहिं अकुलाहीं। देखि दसा हर-गन मुसकाहीं।"

स्पष्टीकरण→

- **स्थायी भाव**→ हास
- **विभाव** → **आलम्बन -** नारद मुनि **आश्रय**- हर-गन
  उद्दीपन- विलक्षण आकृति, चेष्टा ।
- **अनुभाव**→हँसना, खड़े होना, भागना।
- **संचारी भाव**→हर्ष, चपलता, चंचलता ।

अन्य उदाहरण→

- बिंध्य के बासी उदासी तपोब्रत-धारी महा बिनु नारि दुखारे।
  गौतमतीय तरी, तुलसी, सो कथा सुनि भे मुनिवृंद सुखारे॥
  ह्वै हैं सिला सब चंद्रमुखी परसे पद-मंजुल-कंज तिहारे।
  कीन्हीं भली रघुनायकजू करुना करि कानन को पगु धारे॥
- हँसि हँसि भांजै देखि दूलह दिगम्बर को
  पाहुनि जै आवै हिमाचल के उछाह में !
- शीश पर गंगा हंसे भुजनि भुजंगा हंसे
  हास ही को दंगो भयो नंगा के विवाह में !!

⭐करुण रस⭐

⭐**परिभाषा**→'शोक' नामक स्थायी भाव विभाव, अनुभाव, संचारी भाव के संयोग से 'करुण रस' की निष्पत्ति होती है।

अथवा

ईप्सित/ इष्ट वस्तु के नाश से जब हृदय में क्षोभ / दुःख उत्पन्न होता है, उस उत्पन्न क्षोभ को करुण रस कहते हैं।

जैसे→

"अभी तो मुकुट बंधा था माथ।
हुए कल ही हल्दी के हाथ ॥
खुल भी नये लाब के बोल
'बिले थे चुम्बन शून्य कपोल।
हाय रुक गया यहीं संसार,
बना सिंदूर अनल अंगार।
वातहत लतिका यह सुकुमार
पड़ी है हिन्ना धार ॥"

स्पष्टीकरण →

स्थायी भाव→ शोक

विभाव→**आलम्बन** → अभिमन्यु

उद्दीपन→ अभिमन्यु का मृत शरीर,

आश्रय→ अभिमन्यु की पत्नी

अनुभाव→सिर पटकना, छिन्आधार पड़े होना।

संचारी भाव→ स्मृति, विषाद, प्रलाप विलाप

अन्य उदाहरण→

- "शोक विकल सब रोवहिं रानी।
  रूप शील बल तेज बखानी।।
  करहिं विलाप अनेक प्रकारा।
  परहिं भूमि-तल बारहिं बारा ।।"

- मणि खोये भुजंग-सी जननी, फन सा पटक रही थी शीश।
  अन्धी आज बनाकर मुझको, किया न्याय तुमने जगदीश।।

- जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।
  अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।।

वीर रस

परिभाषा-

युद्ध अथवा कठिन कार्य को करने के लिए हृदय में निहित उत्साह' नामक स्थायी भाव के जागृत होने के प्रभावस्वरूप जो भाव उत्पन्न होता है, उसे वीर रस कहते हैं।

अथवा

जब उत्साह नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव व्यभिचारी भाव आदि के द्वारा पुष्ट होता है तब वीर रस की विष्यत्ति होती है।

जैसे→"साजि चतुरंग सेन, अंग में अंग भरि
सरजा सिवाजी जंग जीवन चलत हैं।"

स्थायी भाव → उत्साह

आश्रय→ नायक वीर

आलम्बन→ शत्रु

अनुभाव→रोमांच, अंगस्फुरण

उद्दीपन→युद्ध के बातें

संचारी भाव → आवेग, हर्ष, रोमांचकता |

आये होंगे यदि भरत कुमति वश वन में,
तो मैंने यह संकल्प किया है मन में-
उनको इस शर का लक्ष्य चुनूँगा क्षण में,
प्रतिषेध आपका भी न सुनूँगा रण में।

वीर तुम बढ़े चलो धीर तुम बढ़े चलो।

हाथ में ध्वज रहे बाल दल सजा रहे,
ध्वज कभी झुके नहीं दल कभी रुके नहीं
वीर तुम बढ़े चलो धीर तुम बढ़े चलो।,
सामने पहाड़ हो सिंह की दहाड़ हो
तुम निडर डरो नहीं तुम निडर डटो वहीं
वीर तुम बढ़े चलो धीर तुम बढ़े चलो।

मैं सत्य कहता हूँ सखे सुकुमार मत जानो मुझे,
यमराज से भी युद्ध में प्रस्तुत सदा मानो मुझे,
है और कि तो बात क्या गर्व मैं करता नहीं,

मामा तथा निज तात से भी युद्ध में डरता नहीं।

शांत रस

परिभाषा→

"ज्ञान की प्राप्ति अथवा संसार से वैराग्य होने के पश्चात जब मनुष्य को न सुख- दुःख और न किसी से द्वेष-राग होता है, तो ऐसी मनोस्थिति में मन में उठा विभाव शांत रस कहलाता है।"

जैसे-1. 'तपस्वी! क्यों इतने हो क्लांत, वेदना का यह कैसा वेग ?

आह! तुम कितने अधिक हताश बताओ यह कैसा उद्वेग ?

2- मन रे! परस हरि के चरण,

सुलभ सीतल कमल कोमल, त्रिविध ज्वाला हरण |

3 – जब मैं था तब हरि नाहिं अब हरि है मैं नाहिं,
सब अँधियारा मिट गया जब दीपक देख्या माहिं।